ISSN : 2278-4632

JUNI KHYAT
जूनी ख्यात

इतिहास, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका

A Peer-Reviewed and Listed in UGC Care List

R

RR935804776IN

REGD. PRINTED BOOK PACKET

डॉ. पीयूष भादविया, डी-16, आदर्शनगर
विश्वविद्यालय रोड उदयपुर-313001
(राज.

'जूनी ख्यात' सम्पादक मण्डल

प्रो. हरबंस मुखिया	पूर्व विभागाध्यक्ष	इतिहास विभाग, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. बराज्ञा शिंदे	पुरातत्त्व एवं प्राचीन इतिहास	कुलपति डक्कन कॉलेज, पूना
प्रो. एस. इनायत अली जैदी	पूर्व विभागाध्यक्ष	जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. एल.एस. निगम	प्राचीन इतिहास	पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर
प्रो. दिलबाग सिंह	आर्थिक इतिहास	इतिहास विभाग, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. जी.एस.एल. देवड़ा	मध्यकालीन इतिहास	पूर्व कुलपति, कोटा खुला विश्वविद्यालय कोटा (राजस्थान)
प्रो. के.एस. गुप्ता	पूर्व विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग	मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
प्रो. अब्दुल मतीन	पूर्व विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)
प्रो. आर. आगापाल	आधुनिक इतिहास	स्कूल ऑफ सोशियल साईंसेज, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

Review of Literature for a study on Marine Fishers in India 70-78
Pradip Roy and *Dr. Chetan Chaudhari*

Health Status of Women in Bihar : A Study 79-86
Dr. Pragati

Empowering Women Through Education in India 87-92
Shweta Bajaj and *Abhishek Verma*

गुप्तयुग में कृषि विज्ञान एवं तकनीकी : एक अध्ययन 93-107
डॉ. धर्मराज शिवाजी पंवार

विष्णु मंदिर : चौहानकालीन मूर्तिशिल्प का नवीन 108-112
अन्वेषित केन्द्र : बीकमपुर (बीकानेर, राजस्थान)
डॉ. सुखाराम एवं डॉ. कोमलकान्त शर्मा

मारवाड़ में तेल उद्योग में प्रयुक्त उत्पादन पद्धति : 113-120
17वीं-18वीं शताब्दी के विशेष सन्दर्भ में
डॉ. मधु कुमावत

लोक देवी 'आवड़' का ऐतिहासिक योगदान 121-130
डॉ. सीमन्तिनी पालावत

श्रीमाल पुराण के आधार पर भीनमाल क्षेत्र के 131-143
शक्तिपीठ एवं उनकी कथाएं
डॉ. पीयूष भादविया एवं मोहित शंकर सिसोदिया

मारवाड़ के ताजीमी ठिकानों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 144-150
डॉ. भगवान सिंह शेखावत

अठारहवीं सदी बीकानेर में राजस्थानी एवं बीसवीं सदी में 151-160
हिन्दी ग़ज़ल लेखन की परम्परा
दुर्गा सुथार

मारवाड़ राजघराने के प्रमुख दग्ध स्थल 161-167
सूर्यवीर सिंह

श्रीमाल पुराण के आधार पर भीनमाल क्षेत्र के शक्तिपीठ एवं उनकी कथाएं

डॉ. पीयूष भादविया • मोहित शंकर सिसोदिया

भीनमाल, राजस्थान के जालोर जिले का एक उपखण्ड है। भीनमाल को पूर्व में श्रीमालनगर, श्रीमालपुर, रत्नमाल, पुष्पमाल, फूलमाल, आलमाल, सिंधुराजपुर, भिल्लमाल जैसे कई नामों से जाना जाता रहा है।[1] श्रीमालनगर नाम ऐतिहासिकता की दृष्टि से अत्यधिक प्रसिद्ध रहा है। भीनमाल 7वीं से 12वीं शताब्दी तक एक उन्नत व्यापारिक, धार्मिक एवं राजनीतिक केन्द्र रहा है। यह शैव-वैष्णव-शाक्त-सौर सम्प्रदायों एवं ब्राह्मण-जैन-बौद्ध धर्मों का प्रसिद्ध केन्द्र रहा है। आयुर्वेद के विद्वान श्रीमहुर, महान गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त, महाकवि माघ, जैन विद्वान सिद्धर्षि गणि जैसे कई महान विभूतियों की जन्मभूमि के साथ-साथ कर्मभूमि भी रहा है। भगवान आदि शिव, नारद, वशिष्ठ, गौतम, मार्कण्डेय एवं कई ऋषियों की तपो-भूमि रहा है। यहां महावीर स्वामी ने अपने जीवन काल में विचरण किया है। अतएव, भीनमाल या श्रीमाल क्षेत्र अपने आप में अति महत्वपूर्ण रहा है।[2]

स्कन्दपुराण के अन्तर्गत श्रीमाल महात्म्य का वर्णन है, जिसे श्रीमालपुराण भी कहा जाता है। मूल रूप से इसका रचयिता महर्षि वशिष्ठ को माना जाता है। श्रीमालपुराण हमें प्राचीन भीनमाल के विभिन्न आयामों की जानकारी देता है।

अंग्रेज विद्वान जैक्सन ने बॉम्बे गजेटियर-1896 ई. में श्रीमाल पुराण की ऐतिहासिकता की चर्चा सर्वप्रथम की है। जहां उन्होंने श्रीमाल पुराण के लेखन काल की गणना 14वीं शताब्दी से पूर्व की बताई है।[3] श्रीमाल पुराण का सर्वप्रथम प्रकाशन गुजराती भाषा में 1899 ई. में हुआ। इसका संस्कृत से गुजराती में अनुवाद जटाशंकर लीलाधर एवं केशवजी विश्वनाथ ने किया।[4]

श्रीमालपुराण में भीनमाल स्थित कुलदेवियों तथा कुलदेवताओं के बारे में भी बड़े विस्तार से बताया गया है। वर्तमान भीनमाल में आज भी यह धार्मिक स्थल व्यवस्थित है, जिनमें देश भर से विभिन्न गोत्रों के लोगों की अपनी गहरी आस्था है।[5] यह स्थल वर्तमान भीनमाल की सांस्कृतिक गतिविधियों को संचालित करते है। ह्वेनसांग के वृतान्त के अनुरूप इन प्रमुख देवालयों की कुल संख्या पचास से ज्यादा है[6] तथा श्रीमालपुराण के अनुसार चौदह देवियों की चर्चा मिलती है। इन चौदह कुलदेवियों के मंदिरों में से नौ के मंदिर भीनमाल नगर-पालिका क्षेत्र में हैं, जबकि पांच मंदिर भीनमाल के निकटतम ग्रामों में अवस्थित हैं। इन मंदिरों के साथ जुड़ी कथाएं भी श्रीमाल पुराण के अनुसार इस आलेख में प्रस्तुत हैं।

श्री क्षेंमकरी माताजी पहाड़ी, (भीनमाल)

क्षेंमकरी देवी के प्रति आस्था भीनमाल ही नहीं अपितु राजस्थान के अन्य क्षेत्रों एवं गुजरात में भी हैं। यह भीनमाल के मंदिरों में सर्वाधिक आस्था का केन्द्र है। भीनमाल के दक्षिण में एक पर्वत पर क्षेंमकरी माता का मंदिर है, जो एक प्राचीन किले जैसा लगता है। गर्भगृह में देवी के दांई ओर काला भैरव तथा गणेश की प्रतिमा है और बांई ओर गौरा भैरव एवं चामुण्डा या सुन्धा माता हैं। क्षेंमकरी देवी की प्रतिमा चार भुजाधारी एवं सिंह पर सवार है। क्षेंमकरी देवी का दूसरा प्रसिद्ध नाम खिमज माता है। सुन्धा या चामुण्डा माता, क्षेंमकरी देवी की बहन मानी जाती है। क्षेंमकरी देवी शांडिल्य श्रीमालियों के साथ-साथ चालुक्य-सोलंकी गौत्र की कुलदेवी है।

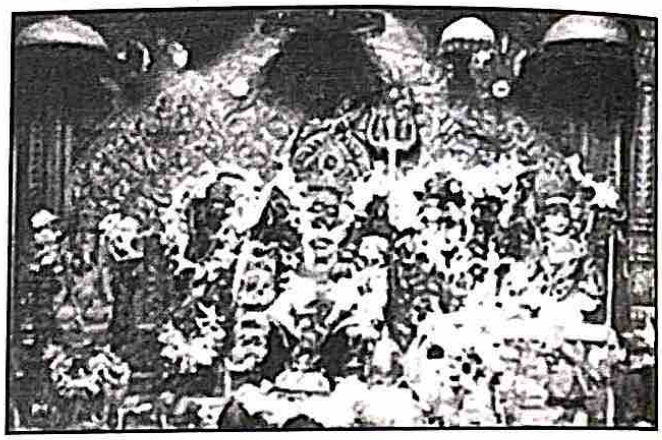

क्षेंमकरी देवी

श्रीमाल पुराण के अनुसार, दैत्य ब्राह्मणों को परेशान करते थे। एक बार गौतम ऋषि के आश्रम में ऊत्तमोज नाम के राक्षस ने एक ब्राह्मण को पकड़ लिया। तभी गौतम ऋषि ने सावित्री मंत्र पढ़कर यज्ञ में काष्ठ दी। तब देवी प्रकट हुई तथा देवी ने दैत्य से युद्ध किया, पर उसका नाश नहीं हो रहा था, तो गौतम ऋषि ने कहा कि शस्त्रों से इस दैत्य का वध नहीं हो पाएगा। तब देवी ने पर्वत का शिखर लेकर राक्षस के सिर पर दे मारा। राक्षस शिखर के नीचे दबकर मर

दैत्य आया तो बिल्वपत्र के बीच से उस शक्ति ने प्रकट होकर दैत्य का वध कर दिया।

गौतमी ने देवी की मधुर शब्दों में स्तुति की। देवी ने कहा, हे तपस्विनी! मैं तुम्हारे तप से प्रसन्न हूँ। तुम इच्छित वर मांगो। गौतमी ने कहा कि मुझे सांसारिक कार्यों से कोई लगाव नहीं है। मैं आपके नित्य दर्शन करती रहूँ इसलिये आप सदा यहीं पर निवास करें। वह देवी खरानना देवी के नाम से विख्यात हुई।[26]

इस प्रकार से उपर्युक्त आलेख में भीनमाल के देवी मंदिरों से सम्बन्धित कथाएं स्पष्ट होती हैं। इन देवी मंदिरों में कई गौत्रों की कुलदेवियाँ विराजमान हैं। ये मंदिर जन आस्था के केन्द्र के साथ-साथ सांस्कृतिक महत्व भी रखते हैं। इन मंदिरों में समय-समय पर लगने वाले मेलों, उत्सवों एवं धार्मिक अनुष्ठानों से आर्थिक-क्रियाकलाप भी संचालित होते हैं, जिससे भीनमाल का सामाजिक एवं आर्थिक विकास हो रहा है।

संदर्भ

1. राव गणपतसिंह चीतलवाणा, *भीनमाल का सांस्कृतिक वैभव*, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण; 2011, पृ. 13
2. रत्न संचय सूरीश्वर, *जैन ग्रंथों की गोद में भीनमाल की भव्यता*, श्री रंजनविजयजी जैन पुस्तकालय, मालवाड़ा, प्रथम संस्करण, 2015, पृ. 291
3. *मातेश्वरी संदेश*, मासिक पत्रिका, ग्रंथ लेखमाला, 3 मार्च 2015, पृ. 15
4. जटाशंकर लीलाधर एवं केशवजी विश्वनाथ, *श्रीमाल पुराण*, विजय प्रवर्तक, अहमदाबाद, 1899, पृ. 5
5. राजेन्द्र ओझा, *श्रीमाली गोत्रानुसार कुलदेवियां*, अखिल भारतीय श्रीमाली मैत्री संगम, मुम्बई, 2008, पृ. 3
6. ठाकुर प्रसाद शर्मा एवं डॉ. शाहिद अहमद, *ह्वेनसांग की भारत यात्रा*, साहित्यागार, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2006, पृ. 413
7. वशिष्ठ मुनि; हिन्दी अनुवादक : रमाकान्त एम. व्यास, संपादक : भावेश भारद्वाज, *श्रीमाल पुराण*, श्रीमाली संदेश, अहमदाबाद, प्रथम संस्करण, 2016, पृ. 130-135
8. राजेन्द्र ओझा, पूर्वोक्त, पृ. 69-70
9. भगवतीलाल शर्मा, *श्री सुन्धा माता तीर्थ*, चतुर्थ संस्करण, श्रीकृष्ण-रूकमणी प्रकाशन, जोधपुर, 2012, पृ. 5

10. राजेन्द्र ओझा, पूर्वोक्त, पृ. 75-77
11. भगवतीलाल शर्मा, पूर्वोक्त, पृ. 20-22
12. वशिष्ठ मुनि, पूर्वोक्त, पृ. 156-58
13. राजेन्द्र ओझा, पूर्वोक्त, पृ. 35
14. वशिष्ठ मुनि, पूर्वोक्त, पृ. 246-251
15. वही, पृ. 54-57
16. राजेन्द्र ओझा, पूर्वोक्त, पृ. 61-62
17. वशिष्ठ मुनि, पूर्वोक्त, पृ. 68-73
18. वही, पृ. 256-257
19. वही, पृ. 230-234
20. वही, पृ. 118-119
21. वही, पृ. 94-103
22. वही, पृ. 228-229
23. वही, पृ. 79-82
24. वही, पृ. 226
25. वही, पृ. 110-117
26. वही, पृ. 141-143

डॉ. पीयूष भादविया
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

मोहित शंकर सिसोदिया
शोधार्थी, इतिहास विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

❑❑❑